प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करके अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को बढ़ाने का मौका मिलता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि साथियों का समूह सामाजिक शिक्षण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

(3) स्कूल — सामाजिक शिक्षण के साधन के रूप में विद्यालय का भी महत्वपूर्ण योगदान पाया जाता है। इस संदर्भ में समाज मनोवैज्ञानिकों का मत है कि विद्यालय में बच्चे मात्र किताबी ज्ञान ही नहीं पाते बल्कि वे वहाँ सामाजिक मूल्यों, सामाजिक संस्थानों, सामाजिक मानकों की भी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से विद्यालय औपचारिक शिक्षा केन्द्र के साथ-साथ सामाजिक शिक्षण का भी केन्द्र है।

स्कूल में शिक्षक की भूमिका सबसे प्रधान होती है। शिक्षक का व्यक्तित्व तथा उनके द्वारा छात्रों के साथ होने वाली अन्तःक्रियाओं का बच्चों के समाजीकरण पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। यह पाया गया है कि यदि शिक्षक स्वयं सामाजिक शीलगुणों से पूर्ण हैं तथा बच्चों के साथ स्नेहपूर्ण अन्तःक्रिया करते हैं तो इनसे बच्चों में प्रोत्साहन तथा उत्साह उत्पन्न होता है और बच्चों में सांवेगिक एवं सामाजिक समायोजन करने की क्षमता अधिक बढ़ जाती है। ऐसे बच्चों का समाजीकरण तेजी से होता है।

विद्यालय में विभिन्न पाठ्य-पुस्तकें छात्रों को पढ़ने के लिए दी जाती हैं। बच्चों में सामाजिक मनोवृत्ति एवं सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण धीरे-धीरे इन पाठ्य-पुस्तकों में लिखे गए तथ्यों द्वारा होता है। बराबाई (1985) ने अपने अध्ययन में पाए हैं कि पाठ्य-पुस्तकों में लिखे गए तथ्यों द्वारा बच्चों का समाजीकरण बहुत हद तक होता है।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यालय के विभिन्न पहलुओं का प्रभाव भी बच्चों के समाजीकरण पर पड़ता है।

K. Anand M.A II Sem (2)
2

(4) पास-पड़ोस :— सामाजिक शिक्षण का पास-पड़ोस भी एक महत्वपूर्ण स्रोत या साधन है। व्यक्ति जहाँ निवास करता है वहाँ के निवासियों के संपर्क में आने पर व्यक्ति नए-नए व्यवहारों को सीखता है। आपस में मिलकर प्रायः पड़ोसियों द्वारा भिन्न-भिन्न तरह के सामाजिक समस्याओं पर विचार किया जाता है जिससे व्यक्ति नए-नए आदर्शों से परिचित होता है और व्यक्ति उन्हें चेतन या अचेतन रूप से अपने व्यक्तित्व में समाविष्ट कर लेता है।

शेरीफ (1948) ने अपने अध्ययन में पाए हैं कि माता-पिता एवं परिवार के बाद बच्चों के समाजीकरण पर पास-पड़ोस का ही सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

(5) जाति एवं वर्ग :— हमारे समाज में जाति एवं ऊँच-नीच है जिससे समाजीकरण की प्रक्रिया नियन्त्रित होती है। जाति व्यक्ति के जन्म के आधार पर निर्धारित होने वाली एक व्यवस्था है जो अपने सदस्यों द्वारा कुछ निश्चित नियम तथा प्रतिबन्ध प्रस्तुत करती है। जाति का प्रभाव व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक होनेवाली सभी तरह की घटनाओं एवं संबंधों पर पड़ता है।

वर्ग व्यवस्था भी सामाजिक शिक्षण पर असर डालता है। भारतीय समाज आज सामान्यतः तीन वर्गों में बटा हुआ है जिसकी सरकारी मान्यता भी है। सामान्यतः पूरा भारतीय समाज उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग और निम्न वर्ग में बटा हुआ है। इन तीनों वर्गों की अपनी-अपनी विशेष सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति होती है जिसके आधार पर इनमें वर्ग चेतना एवं एक खास सामाजिक विचार धाराओं का विकास होते पाया गया है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि जाति एवं वर्ग सामाजिक शिक्षण का मुख्य साधन है।

(6) भाषा :— सामाजिक शिक्षण एवं बौद्धिक विकास में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका पाई जाती है। अर्थात् भाषा सामाजिक शिक्षण का एक महत्वपूर्ण साधन या स्रोत है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति